International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 04, No. 02(I), April - June, 2022, pp.155-160

अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय के शिक्षणार्थियों की शिक्षण वृति के प्रति प्रतिबद्धता का अध्ययन

अनुपमा दीप्ति लकड़ा*
डॉ. (फा.) इग्नासियुस तोपनो**

सार

किसी भी क्षेत्र में प्रभावी और कुशल कार्य निष्पादन के लिए प्रतिबद्धता एक महत्वपूर्ण विशेषता है। हम उच्च तकनीक और उच्च मांग वाले युग में रहते हैं। शैक्षणिक संस्थानों की प्रभावशीलता बढ़ाने के लिए सक्षम और प्रतिबद्ध शिक्षक आज के क्रांतिकारी युग की मांग है। यह शिक्षण वृत्ति के लिए एक सर्वोपरि आवश्यकता है। अच्छे निर्देश के लिए शिक्षकों में वृत्तिगत प्रतिबद्धता अति आवश्यक है। अध्यापक शिक्षा महाविद्यालयों में शिक्षणार्थियों को वृत्तिगत रूप से तैयार किया जाता है ताकि वे भविष्य में एक दक्ष एवं प्रतिबद्ध शिक्षक बन सकें। शिक्षण वृत्ति के प्रति प्रतिबद्ध शिक्षक एक सक्रिय कक्षा प्रबंधक, सामूहिक गतिविधियों का नेतृत्वकर्त्ता एवं आयोजक होने के साथ–साथ छात्रों के चरित्र के निर्माता भी होते हैं। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य अध्यापक शिक्षा महाविद्यालयों के शिक्षणार्थियों की शिक्षण वृत्ति के प्रति प्रतिबद्धता का पता लगाना है। इस अध्ययन में सर्वेक्षण विधि द्वारा पटना जिले के अध्यापक शिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत् 100 शिक्षणार्थियों का चयन प्रतिदर्श के रूप में सउद्देश्य विधि के द्वारा किया गया तथा प्रदत्तों का संकलन स्वनिर्मित एवं वैद्यीकृत प्रश्नावली द्वारा किया गया। प्रदत्तों के सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया। अध्ययन के पश्चात् यह पाया गया कि पटना के अध्यापक शिक्षा महाविद्यालयों के शिक्षणार्थियों में लिंग (महिला एवं पुरूष) एवं महाविद्यालय के प्रकार (सरकारी एवं गैर–सरकारी) के आधार पर शिक्षण वृत्ति के प्रति प्रतिबद्धता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अतः अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय के शिक्षणार्थियों की शिक्षण वृत्ति के प्रति प्रतिबद्धता में समानता है और शिक्षण कार्य की सफलता हेतु शिक्षणार्थियों में शिक्षण वृत्ति के प्रति प्रतिबद्धता अति आवश्यक है।

शब्दकोशः *शिक्षण वृत्ति, प्रतिबद्धता, टी–परीक्षण, मध्यमान, मानक विचलन।*

प्रस्तावना

शिक्षा मानव जाति का एक अद्भूत आविष्कार है। शिक्षा के बिना मनुष्य का जीवन जानवर की तरह है। शिक्षा ही वह माध्यम है जिसकी सहायता से हम एक बेहतर मानवीय समाज का निर्माण कर सकते है। शिक्षा समाज और राष्ट्र को विकसित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह व्यक्ति को पहचान दिलाती है। शिक्षा छात्रों की सम्पूर्ण क्षमताओं को विकसित करने का एक सतत प्रयास है ताकि वह अपने आस–पास के वातावरण को नियंत्रित करने और अपनी आधारभूत जरूरतों को पूरा करने में सक्षम हो सकें। शिक्षक छात्रों का मित्र एवं पथप्रदर्शक के रूप में उनमें आवश्यक सुधार एवं व्यवहार परिवर्तन कर उनकी आकांक्षाओं को प्राप्त करने में मदद करता है। शिक्षक हमारी सम्पूर्ण शिक्षण प्रणाली के साथ–साथ राष्ट्र की भी रीढ़ है। हमारी शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक समस्त प्रणाली का केन्द्रबिन्दू है।

* शोधार्थी, आर्यभट्ट नॉलेज यूनिवर्सिटी, मीठापुर, पटना।
** प्राचार्य, संत जेवियर्स कॉलेज आफ एजुकेशन पटना।

शिक्षक जीवन के हर क्षेत्र में विद्यार्थियों की सहायता करता है। वह विद्यार्थियों को सम्भालता एवं सही आकार प्रदान करता है। शिक्षक अपनी सोचों एवं विचारधाराओं एवं वृत्तिगत संसाधनों को विद्यार्थियों को साझा करता है जो उनके लिए सहायक हो। शिक्षकों का यह प्रमुख दायित्व है कि वे विद्यार्थियों को अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदान करें ताकि वे आसानी से सीख एवं समझ सकें। शिक्षक की भूमिका मित्र, दार्शनिक और मार्गदर्शक की होती है। अतः हम कह सकते हैं कि शिक्षक विद्यार्थियों के लिए आर्दश होता है। विद्यालय समाज का लघु रूप है और समाज का प्रतिनिधित्व करता है।

अतः विद्यालयों को सुव्यवस्थित होना चाहिए एवं शिक्षण–अधिगम हेतु सुविधाओं से युक्त होना चाहिए तथा साथ ही संतुष्ट शिक्षण कर्मचारी भी होने चाहिए। शिक्षा का अधिकार भी इस बात पर बल देता है कि विद्यालय मूलभूत सुविधाओं, योग्य शिक्षण कर्मचारी तथा बेहतर शिक्षण वातावरण प्रदान करेगा। उपर्युक्त चर्चा के आधार पर हम कह सकते हैं कि शिक्षक छात्रों के लिए मशाल धारक के रूप में कार्य करता है। इसलिए उन्हें राष्ट्र निर्माता की संज्ञा दी जाती है।

शिक्षण वृत्ति

प्राचीन काल में अध्यापन या शिक्षण कार्य को सेवा के रूप में देखा जाता था। शिक्षण कार्य का तात्पर्य है ज्ञानदान। समाज में ज्ञानदान एक परम पवित्र एवं महत्त्वपूर्ण सामाजिक हितार्थ कार्य के रूप में स्वीकृति और मर्यादित थी। परन्तु धीरे–धीरे बाद के कालों में यह एक वृत्ति का रूप लेता गया। ज्ञानदान देने वाले शिक्षक एवं शिक्षिकाएं वेतन लेकर उसके एवज में ज्ञान देने का कार्य करने लगे। आज के समय में यह वृत्ति या उद्यम का रूप देखा जाने लगा है क्योंकि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने इस दिशा में अपनी सहमति व्यक्त कर दी है और राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् के द्वारा भी अध्यापन को वृत्ति के रूप में मान लिया गया और इसके लिए गुणात्मक सुधार और स्तरोन्न्यन की आवश्यकता पर बल दिया गया। (अध्यापक शिक्षा 2011)

वृत्ति के प्रति प्रतिबद्धता

टायरी (1996) के अनुसार प्रतिबद्धता सामाजिक प्रयास में किसी व्यक्ति या किसी चीज के प्रति उच्च स्तरीय लगाव को संदर्भित करती है और यह व्यक्तिगत संसाधनों जैसे समय, धन या मेहनत के अतिक्ति खर्च के द्वारा स्वयं को प्रदर्शित करती है। किसी भी क्षेत्र में प्रभावी एवं कुशल कार्य के लिए प्रतिबद्धता मुख्य कारक होता है। अच्छे निर्देशन के लिए शिक्षकों में वृत्तिगत प्रतिबद्धता महत्त्वपूर्ण माना गया है। शिक्षकों का प्राथमिक कर्त्तव्य होना चाहिए कि वे अपने कार्य को पूरी निष्ठा एवं ईमानदारी के साथ करें। व्यक्तिगत हितों को त्याग कर उच्च चारित्रक गुणों को अपनाया जाना चाहिए।

साहित्य की समीक्षा

लोलिता एवं मुल्याना (2022) ने वृत्तिगत हाई स्कूल शिक्षकों के लिंग और कार्यकाल के संदर्भ में वृत्तिगत प्रतिबद्धता का अध्ययन किया। इसमें इन्होंने पाया कि कार्यकाल का वृत्तिगत प्रतिबद्धता पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। इस अध्ययन से पता चलता है कि लंबे कार्यकाल वाले शिक्षक वृत्तिगत प्रतिबद्धता के उच्च स्तर का प्रदर्शन करते हैं। मल्लिक (2020) ने कोविड–19 महामारी में व्यक्तिगत तनाव के संबंध में गुरूग्राम जिले के माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीच वृत्तिगत प्रतिबद्धता का अध्ययन किया। अध्ययन के पश्चात् यह पाया गया कि वृत्तिगत प्रतिबद्धता एक शिक्षक के व्यक्तिगत तनाव से प्रभावित होती है। गुरूग्राम जिले के उच्च व्यक्तिगत तनाव वाले माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की तुलना में कम व्यक्तिगत तनाव वाले माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों में वृत्तिगत प्रतिबद्धता कम थी। अध्ययन में यह भी पाया गया कि वृत्तिगत प्रतिबद्धता व्यक्तित्व, शिक्षण दृष्टिकोण, हास्य की भावना, वृत्तिगत तनाव, आत्म–प्रभावकारिता, शिक्षक की शिथिलता से प्रभावित होती है और बदले में शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता को प्रभावित करती है। आलम (2018) ने माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की वृत्तिगत प्रतिबद्धता का कुछ जनसांख्यिकीय चरों के आधार पर अध्ययन किया। अध्ययन के परिणामों से यह ज्ञात हुआ कि 1. वृत्तिगत प्रतिबद्धता के संबंध में पुरूष और महिला माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीच महत्त्वपूर्ण अन्तर है। 2. वृत्तिगत प्रतिबद्धता के संबंध में ग्रामीण और शहरी

माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीच कोई महत्त्वपूर्ण अन्तर नहीं है। 3. वृत्तिगत प्रतिबद्धता के संबंध में सरकारी और निजी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीच महत्त्वपूर्ण अन्तर है। निष्कर्ष के आधार पर यह सुझाव दिया गया कि संस्थानों के प्रमुख की जिम्मेदारी है कि वे अनुकूल वातावरण एवं उचित संसाधन प्रदान करें, कर्मचारियों के साथ अत्यंत सावधानी और सम्मान के साथ व्यवहार करें। इज्जाती, शोएब और खालिद (2018) यह अध्ययन सरकार में कार्यरत शिक्षकों की वृत्तिगत प्रतिबद्धता का पता लगाने के लिए आयोजित किया गया था। परिणामों से पता चला कि अनुभव की वृद्धि के साथ शिक्षण वृत्ति के प्रति प्रतिबद्धता बढ़ती है। सिंह एवं सिंह (2018) प्रस्तुत अध्ययन में हिमाचल प्रदेश के उना जिले के प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के वृतिगत प्रतिबद्धता स्तर का अध्ययन किया गया है। परिणाम यह दर्शाते हैं कि लिंगवार अंतर, स्थान और स्कूलों के प्रकार शिक्षकों के बीच प्रतिबद्धता में कोई अंतर नहीं है। शिक्षकों की वृत्तिगत प्रतिबद्धता के पाँच आयामों में, "शिक्षार्थी के प्रति प्रतिबद्धता" उच्च है और "बुनियादी मानवीय मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता" का स्तर निम्न पाया गया। प्राथमिक स्तर पर पढ़ाने वाले शिक्षकों और उच्च माध्यमिक स्तर पर पढ़ाने वाले शिक्षकों के स्तर में तथा माध्यमिक स्तर पर एवं उच्च माध्यमिक स्तर पर पढ़ाने वाले शिक्षकों में उनकी समग्र वृत्तिगत प्रतिबद्धता में काफी अंतर पाया गया। मोसेस, बेरी, साब एवं एडमिरल (2017) ने अपने शोध में शिक्षक कौन बनना चाहता है? शिक्षण के प्रति छात्र–शिक्षकों की प्रतिबद्धता के स्वरूप का अध्ययन किया। जिसमें यह पाया गया कि छात्र–शिक्षकों की प्रेरणा, शिक्षण वृत्ति और पर्यावरणीय पहलुओं की धारणाओं के आधार पर चार प्रकार के छात्र–शिक्षक हैं– 1. प्रतिबद्ध भावुक, 2. प्रतिबद्ध समझौता, 3. अनिर्णीत और अप्रतिबद्ध। सभी प्रकार के छात्रों की शिक्षण प्रतिबद्धता को बढ़ाने के लिए शिक्षा पाठ्यक्रम के प्रारूप को इस तरह से परिवर्तित किया जाए जो छात्र–शिक्षकों की जरूरतों को पूरा करता हो। येल्डिज तथा सेलिक (2017) ने अपने अध्ययन शिक्षण वृत्ति के प्रति प्रतिबद्धता में प्रतिबद्ध शिक्षकों और सीखने और सिखाने की प्रक्रिया पर प्रतिबद्धता के प्रभावों पर प्रकाश डालते हुए यह स्पष्ट किया है कि प्रतिबद्धता शिक्षण वृत्ति के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं सर्वोपरि आवश्यकता है। एक प्रतिबद्ध शिक्षक जो उसके पास पहले से है उससे संतुष्ट नहीं होता बल्कि हमेशा नए विचारों और छात्रों के अधिगम को अधिक बढ़ाने के तरीकों की तलाश करता है। शोएब एवं खालिद (2017) ने अपने अध्ययन शिक्षण वृत्ति के प्रति प्रतिबद्धताः शिक्षकों का जनसांख्यिकीय दृष्टिकोण में पंजाब के सरकारी प्राथमिक शिक्षक संस्थानों के कॉलेजों में पढ़ाने वाले शिक्षकों में वृत्तिगत प्रतिबद्धता का पता लगाने के लिए अध्ययन किया। परिणामों से यह ज्ञात हुआ कि अनुभव की वृद्धि के साथ शिक्षण वृत्ति के प्रति प्रतिबद्धता बढ़ती है। पुरूष शिक्षकों की तुलना में महिला शिक्षक अधिक प्रतिबद्ध पायी गयीं।

अध्ययन की प्रसांगिकता

वर्त्तमान में शिक्षा को हमारे देश में मौलिक आधार के अन्तर्गत रखा जाता है। शिक्षण कार्य का सम्पूर्ण भार शिक्षकों के कंधों पर है। शिक्षण वृति के प्रति प्रतिबद्धता की अवधारणा शिक्षकों के शिक्षण कार्य और छात्रों में अधिगम के बीच सम्बन्ध को दर्शाता है। एक शिक्षक जितने अधिक अपनी वृत्ति के प्रति प्रतिबद्ध होंगे उतने ही अधिक छात्रों में अधिगम होंगे। इस अध्ययन के द्वारा शिक्षणार्थियों में शिक्षण वृत्ति के प्रति प्रतिबद्धता के महत्व को समझने, शिक्षण के प्रति लगाव उत्पन्न करने एवं शिक्षण वृत्ति के प्रति समर्पण की भावना विकसित करने में मदद मिलेगी।

उद्देश्य

प्रस्तुत शोध अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैंः

- लिंग के आधार पर अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय के शिक्षणार्थियों की शिक्षण वृत्ति के प्रति प्रतिबद्धता ज्ञात करना।
- महाविद्यालय के प्रकार के आधार पर अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय के शिक्षणार्थियों में शिक्षण वृत्ति के प्रति प्रतिबद्धता ज्ञात करना।

शून्य परिकल्पना

प्रस्तुत शोध अध्ययन की निम्नलिखित परिकल्पनाएँ हैं:

- अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय के महिला एवं पुरूष शिक्षणार्थियों की शिक्षण वृत्ति के प्रति प्रतिबद्धता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- सरकारी एवं गैर–सरकारी अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय के शिक्षणार्थियों की शिक्षण वृत्ति के प्रति प्रतिबद्धता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

विधियाँ

प्रस्तुत शोध अध्ययन की निम्नलिखित विधियाँ हैं:

- **प्रतिदर्श**

इस अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग करते हुए पटना जिले के सरकारी तथा गैर–सरकारी अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय के 100 शिक्षणार्थियों का चयन प्रतिदर्श के रूप में सउद्देश्य विधि से किया गया है।

- **उपकरण**

इस अध्ययन में अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय के शिक्षणार्थियों की शिक्षण वृत्ति के प्रति प्रतिबद्धता ज्ञात करने के लिए स्वनिर्मित एवं वैद्यीकृत प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

- **दत्त–संग्रह**

इस अध्ययन के लिए सरकारी तथा गैर–सरकारी अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय के 100 पुरूष एवं महिला शिक्षणार्थियों का चयन सउद्देश्य विधि द्वारा प्रश्नावली का प्रयोग करते हुए दत्त–संग्रह किया गया है।

- **सांख्यिकीय विश्लेषण**

आंकड़ों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन तथा टी–अनुपात का प्रयोग किया गया है।

परिकल्पना 1: अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय के महिला एवं पुरूष शिक्षणार्थियों की शिक्षण वृत्ति के प्रति प्रतिबद्धता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

समूह	कुलावृत्ति	मध्यमान	मानक विचलन	टी–अनुपात	सार्थकता स्तर
पुरूष शिक्षणार्थी	44	94.70	7.463335	1.70441	सार्थक नहीं
महिला शिक्षणार्थी	56	97.25	7.349088		

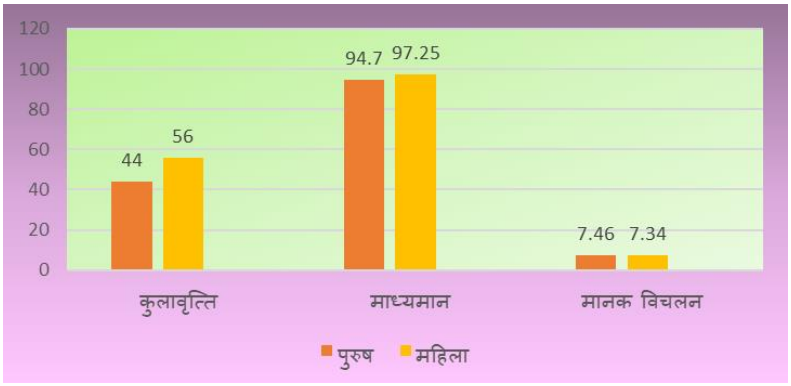

टी–टेबल में देखने पर यह पता चलता है कि 98 डिग्री ऑफ फ्रीडम (डीएफ) में 0.05 स्तर पर सार्थकता मान 1.98 है तथा प्राप्त टी–अनुपात का मान 1.70441 है, जो टी–टेबल के टी–मान से कम है अर्थात् यह परिकल्पना अस्वीकृत नहीं हुई। अतः अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय के पुरूष एवं महिला शिक्षणार्थियों के बीच शिक्षण वृत्ति के प्रति प्रतिबद्धता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। दूसरे शब्दों में दोनों समूह समान है।

परिकल्पना 2: सरकारी एवं गैर–सरकारी अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय के शिक्षणार्थियों की शिक्षण वृत्ति के प्रति प्रतिबद्धता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

समूह	कुलावृत्ति	मध्यमान	मानक विचलन	टी–अनुपात	सार्थकता स्तर
सरकारी	50	95.24	6.545165	1.19388	सार्थक नहीं
गैर–सरकारी	50	97.02	8.264727		

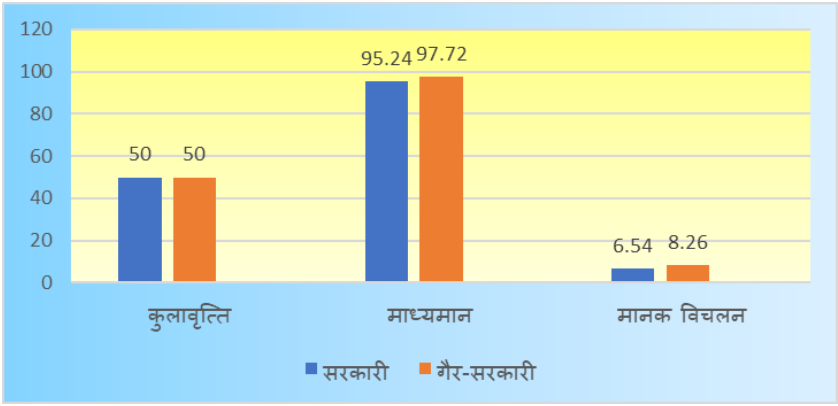

टी–टेबल में देखने पर यह पता चलता है कि 98 डिग्री ऑफ फ्रीडम (डीएफ) में 0.05 स्तर पर सार्थकता मान 1.98 है तथा प्राप्त टी–अनुपात का मान 1.19388 है, जो टी–टेबल के टी–मान से कम है अर्थात् यह परिकल्पना अस्वीकृत नहीं हुई। अतः अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय के सरकारी शिक्षणार्थियों सरकारी तथा गैर–सरकारी शिक्षणार्थियों के बीच शिक्षण वृत्ति के प्रति प्रतिबद्धता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। दूसरे शब्दों में दोनों समूह समान है।

परिणाम

इस अध्ययन से सम्बन्धित आंकड़ों के विश्लेषण एवं निरूपण के पश्चात् निम्नांकित परिणाम प्राप्त हुएः

- अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय के महिला एवं पुरूष शिक्षणार्थियों की शिक्षण वृत्ति के प्रति प्रतिबद्धता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
- सरकारी एवं गैर–सरकारी अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय के शिक्षणार्थियों की शिक्षण वृत्ति के प्रति प्रतिबद्धता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

शैक्षिक सुझाव

शिक्षा के क्षेत्र में समय–समय पर अनुसंधान के माध्यम से विभिन्न शैक्षिक, सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक समस्याओं पर अध्ययन कर उनका निराकरण किया जा सकता है। इस तरह के अध्ययन प्राथमिक माध्यमिक एवं उच्च स्तर के विभिन्न संकायों के शिक्षणार्थियों पर किया जा सकता है जो शिक्षण को अपनी वृत्ति बनाना चाहते हैं। अध्ययन के लिए विभिन्न जनसांख्यिकीय चरों का उयोग किया जा सकता है। अध्ययन के क्षेत्र को विस्तृत किया जा सकता है।

निष्कर्ष

उपरोक्त परिणामों से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय के शिक्षणार्थियों की लिंग एवं महाविद्यालय के प्रकार के आधार पर शिक्षण वृत्ति के प्रति प्रतिबद्धता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय के शिक्षणार्थियों की शिक्षण वृत्ति के प्रति प्रतिबद्धता में समानता पाई गयी अर्थात् स्पष्ट है कि अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय के शिक्षणार्थी शिक्षण वृत्ति के प्रति समान रूप से सजग एवं प्रतिबद्ध हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षण वृत्ति की सफलता के लिए ज्ञान एवं शिक्षण कौशल के साथ–साथ शिक्षण वृत्ति के प्रति प्रतिबद्धता अति आवश्यक है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्रवाल, जे. सी. (2010–11). शिक्षा के दार्शनिक, सामाजिक एवं आर्थिक आधार, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।
2. भटाङ्गचार्य, जी. सी., (2010–11). अध्यापक शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।
3. आलम, एम. एम.(2018). माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की वृत्तिगत प्रतिबद्धता का कुछ जनसांख्यिकीय चरों के आधार पर अध्ययन. *द इन्टरनेशनल जरनल ऑफ इंडियन साइकोलोजी. खंड*(6), *अंक*(4), https://ijip.in/wp-content/uploads/2020/06/18.01.105.20180604.pdf से दिनांक 10.05.2022 को लिया गया।
4. इज्जाती, यू. ए., नूरचयाती, एन., लोलिता, वाई. और मुल्याना, ओ. पी. (2022). वृत्तिगत हाई स्कूल शिक्षकों के लिंग और कार्यकाल के संदर्भ में वृत्तिगत प्रतिबद्धता. *आई. जे. ओ. आर. ई. आर. : इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ रीसेंट एजुकेशनल रिसर्च। अंक*(3), न.: 2. https://www.semanticscholar.org/paper/Professional-Commitment-in-Terms- of-Gender-and-of-Izzati-Nurchayati/7b408bd725ec8b809c11d4703d93019efd 00866d से दिनांक 07.04.2022 को लिया गया।
5. टायरी, ए. के. (1996). उच्च विद्यालय शिक्षण के प्रति संकल्पना और मापन प्रतिबद्धता. *जरनल ऑफ एडूकेशनल रिसर्च, 89,* 295–304. https://www.semanticscholar.org/paper/Conceptualizing-and-Measuring-Commitme-to-High-Tyree/50c00cdcf0f1b03e5b985d8d9ced6e91ef7c3141 से दिनांक 23.03.22 को लिया गया।
6. मल्लिक, यू. (2020). कोविड–19 महामारी में व्यक्तिगत तनाव के संबंध में गुरूग्राम जिले के माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीच वृत्तिगत प्रतिबद्धता. *मुक्ति शब्द जरनल, खंड*(प), *अंक*(टप), पृ.सं. 5553 https://www.semanticscholar.org/paper/professional-commitment-among-secondary- school-OFMalik/a8d1517b25027afb61f28deb6f 635bb3c97fa465 से दिनांक 07.04.2022 को लिया गया।
7. मोसेस, आई., बेरी, ए. साब, एन. तथा एडमिरल डब्ल्यू. (2017). शिक्षक कौन बनना चाहता है? शिक्षण के प्रति छात्र–शिक्षकों की प्रतिबद्धता का स्वरूप. *जरनल ऑफ एडूकेशन फॉर टीचिंग. खंड*(34), *अंक*(4), 444–445. https://www.tandfonline.com/doi/full/10.1080/02607476.2017.1296562 से दिनांक 07.04.2022 को लिया गया।
8. शोएब, एच. और खालिद, आई. (2018). शिक्षण वृत्ति के साथ प्रतिबद्धताः शिक्षक शिक्षकों का जनसांख्यिकीय दृष्टिकोण. *पाकिस्तान जरनल ऑफ एजुकेशन. खंड*(34), नं.(2), 19–36. https://www.semanticscholar.org/paper/Commitment-with-the-Teaching-\Profession:View-of-IbrahimKhalid/c6b00ef10b6861b71226d6f160e77de2bcf d506a से दिनांक 19.03.22 को लिया गया।
9. सेलिक, बी. तथा यिल्डिज़, वाई. (2017). शिक्षण वृत्ति के लिए प्रतिबद्धता. *इन्टरनेशनल जरनल ऑफ सोशियल साइंस एंड एडूकेशनल स्टडिस. खंड*(4), *अंक*(2), 93–97 https://www.proquest.com/scholarly-journals/commitment-teaching-profession/docview/2394981349/se-2 से दिनांक 07.04.2022 को लिया गया।
10. सिंह, एल. और सिंह, एस. (2018). वृत्तिगत प्रतिबद्धताः प्रदर्शन बढ़ाने के लिए पाठ्यचर्या और शैक्षिक प्रणाली के बीच एक आवश्यक कड़ी। *जरनल ऑफ एडवांसेज एंड स्कॉलरली रिसर्च इन एलाइड एजुकेशन. खंड*(15), *अंक*(8), https://www.semanticscholar.org/paper/Professional-Commitment%3A-an-Essential-Link-Between-SinghSingh/ 01a617bf81d9f7f1bed470069c4a2a2b5c29b9eb से दिनांक 07.04.2022 को लिया गया।
11. सूद, वि. एवं आनंद, ए. (2010). हिमाचल प्रदेश के शिक्षक शिक्षकों में वृत्तिगत प्रतिबद्धता के स्तरों का अध्ययन *जरनल ऑफ ऑल इंडिया एसोसिएशन फॉर एडूकेशनल रिसर्च, 22*(1), http://www.aiaer.net/ejournal/vol22110/7.pdf से दिनांक 21.12.17 से लिया गया।

❖◆❖